CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 05

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   चंपारण सत्याग्रह के बीच जो लोग गांधीजी के सम्पर्क में आए वे आगे चलकर देश के निर्माताओं में गिने गए। चंपारण में गांधीजी न सिर्फ सत्य और अंहिसा का सार्वजनिक हितों में प्रयोग कर रहे थे बल्कि हलुवा बनाने से लेकर सिल पर मसाला पीसने और चक्की चलाकर गेहूँ का आटा बनाने की कला भी उन बड़े वकीलों को सिखा रहे थे, जिन्हें गरीबों की अगुवाई की जिम्मेदारी सौंपी जानी थी। अपने इन आध्यात्मिक प्रयोगों के माध्यम से वे देश की गरीब जनता की सेवा करने और उनकी तकदीर बदलने के साथ देश को आजाद कराने के लिए समर्पित व्यक्तियों की एक ऐसी जमात तैयार करना चाह रहे थे जो सत्याग्रह की भट्टी में उसी तरह तपकर निखरे, जिस तरह भट्टी में सोना तपकर निखरता और कीमती बनता है।

   गांधीजी की मान्यता थी कि एक प्रतिष्ठित वकील और हजामत बनाने वाले हज्जाम में पेशे के लिहाज से कोई फर्क नहीं, दोनों की हैसियत एक ही है। उन्होंने पसीने की कमाई को सबसे अच्छी कमाई माना और शारीरिक श्रम को अहमियत देते हुए उसे उचित प्रतिष्ठा व सम्मान दिया था। कोई काम बड़ा नहीं, कोई काम छोटा नहीं, इस मान्यता को उन्होंने स्थापित करना चाहा। मर्यादाओं और मानव-मूल्यों को उन्होंने प्राथमिकता दी ताकि साधन शुद्धता की बुनियाद पर एक ठीक समाज खड़ा हो सके। आजाद हिन्दुस्तान आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और आत्म-सम्मानित देश के रूप में विश्व-बिरादरी के बीच अपनी एक खास पहचान बनाए फिर उसे बरकरार भी रखे।

   i. गांधी जी ने अच्छे समाज के निर्माण के लिए किसे महत्व दिया?
   ii. एक प्रतिष्ठित वकील और हज्जाम के बारे में गाँधी जी की क्या मान्यता थी?
   iii. गाँधीजी बड़े वकीलों को क्या सिखाना चाहते थे और क्यों?

iv. गाँधी आध्यात्मिक प्रयोग क्यों कर रहे थे।
v. व्यवसाय के लेकर गाँधीजी के क्या विचार थे?
vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

i. सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला तो कागज का एक टुकड़ा निकल आया। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
ii. उसे दफ्तर की नौकरी से घृणा थी। (वाक्य भेद बताइए।)
iii. उनको पूरा-पूरा विश्वास था कि ठाकुर साहब मेंबर बन जाएँगे। (सरल वाक्य में बदलिए।)
iv. लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

3. **निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए- (4)**

i. बच्चों ने फिल्म की भूरि-भूरि प्रशंसा की। (कर्मवाच्य में)
ii. बाढ़ग्रस्त जम्मू-कश्मीर के लिए अनेक लोगों द्वारा उदारता दिखाई गई। (कर्तृवाच्य में)
iii. मैं अब चुप नहीं बैठ सकता। (भाववाच्य में)
iv. उससे खड़ा भी नहीं हुआ जाता। (कर्तृवाच्य में)

4. **निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का परिचय दीजिए- (4)**

i. बच्ची ने गुडिया को सजाया और सुला दिया।
ii. बच्चे चित्रों वाली पुस्तकें बहुत पसंद करते हैं।
iii. भारत ने वेस्टइंडीज से पहला मैच जीत लिया।
iv. मुझसे यह काम नहीं हो सकेगा।

5. **काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए: (4)**

i. साक्षी रहे संसार करता हूँ प्रतिज्ञा पार्थ में,
पूरा करूगा कार्य सब कथनानुसार यथार्थ मैं।
जो एक बालक को कपट से मार हँसते हैं अभी,
वे शत्रु सत्वर शोक-सागर-मग्न दीखेंगे सभी।
ii. साथ दो बच्चे भी हैं, सदा हाथ फैलाए,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।
iii. मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै
तू काहे नहिं बेगहीं आवै, तोको कान्ह बुलावै

iv. श्रृंगार रस के स्थायी भाव का नाम लिखिए।

6. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

वही पुराना बालाजी का मंदिर जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का। यह रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा के मार्फत इयोढ़ी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन और बतूलन जब गाती हैं तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती हैं। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली है। एक प्रकार से उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनबाई और बतूलनबाई ने उकेरी है।

i. बिस्मिल्ला खाँ का असली नाम क्या था ?
ii. उनका बचपन कहाँ गुजरा ? बिस्मिल्ला खाँ का काशी से इतना जुड़ाव क्यों था ?
iii. अमीरुद्दीन का सामान्य परिचय क्या है ?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. बालगोबिन भगत पाठ में चित्रित ग्रामीण परिवेश को अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हुए उस पर बालगोबिन भगत पर संगीत के प्रभाव एवं महत्व को स्पष्ट कीजिए।

ii. 'लखनवी अंदाज़' व्यंग्य किस सामाजिक वर्ग पर कटाक्ष करता है?

iii. फ़ादर बुल्के की उपस्थिति देवदारु की छायी जैसी क्यों लगती थी?

iv. लेखिका मन्नू भंडारी और उसके भाई-बहनों का सारा लगाव किसके साथ था और क्यों ?

v. 'एक कानी यह भी की लेखिका मन्नू भंडारी के पिता ने रसोई को 'भटियार खाना' कहकर क्यों संबोधित किया है? यह उनकी किस सोच का परिचायक है?

8. **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (6)**

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;
एक की नहीं,
दो की नहीं,

हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म;

i. कवि ने फसल को नदियों के जल का जादू क्यों कहा है?
ii. 'लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
iii. फसल को मिट्टी का गुण-धर्म क्यों कहा है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

    i. फागुन में ऐसी क्या बात थी कि कवि की आँख हट नहीं रही है?

    ii. गायक सरगम को लाँघकर कहाँ चला जाता है? वह वापस कैसे आता है?

    iii. मानव की किन वृत्तियों को जीवन के लिए दुःखदायी माना गया है? 'छाया मत छूना' कविता के आधार पर लिखिए।

    iv. कन्यादान कविता में किसे दुःख बाँचना नहीं आता था और क्यों?

    v. लक्ष्मण ने परशुराम से किस प्रकार क्षमा-याचना की और क्यों?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

    i. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकरे सिसकना क्यों भूल जाता है?

    ii. रानी एलिज़ाबेथ के आने की खबर से भारतीय अखबारों में क्या-क्या छप रहा था ?

    iii. प्राकृतिक सौन्दर्य के अलौकिक दृश्यों में डूबकर मनुष्य अपनी परेशानियाँ भूल जाता है। 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

11. **शिक्षा व्यवस्था** विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। **(10)**

    - वर्तमान शिक्षा प्रणाली,
    - सुधार अपेक्षित,
    - वांछनीय शिक्षा-व्यवस्था।

OR

विदेशी आकर्षण विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- विदेश के लिए मोह,
- सुविधापूर्ण जीवन,
- प्रतिष्ठा का प्रश्न।

OR

जल ही जीवन है विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- जल का बचाव,
- भावी स्थिति की कल्पना,
- उपाय।

12. उत्तराखण्ड आपदा में स्वयं भोगी कठिनाइयों का वर्णन करने हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए। **(5)**

OR

अपने नए विद्यालय के परिवेश और शैक्षिक-शैक्षणिक गतिविधियाँ का उल्लेख करते हुए चचेरे भाई को पत्र लिखिए।

13. आपने अपने शहर में डिजाइनर बुटिक खोला है। उसके प्रचार के लिए 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **(5)**

OR

राजा फिल्म के.लिए लड़के व लड़कियों की प्रतिभा को परखने हेतु 25-50 शब्दो मे एक विज्ञापन तैयार कीजिए |

CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 05

Answer

Section A

1. i. मर्यादाओं और मानव मूल्यों को गांधीजी ने अच्छे समाज के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण माना क्योंकि साधन की शुद्धता पर ही एक सवस्थ समाज का निर्माण हो सकता है।
   ii. गाँधी जी की मान्यता थी कि इन दोनों में पेशे के लिहाज से कोई फर्क नहीं, दोनों की हैसियत एक ही है क्योंकि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता ।
   iii. गाँधी जी बड़े वकीलों को हलुवा बनाने से लेकर सिल पर मसाला पीसना और चक्की चलाकर गेहूँ का आटा पीसने की कला सिखाना चाहते थे ताकि वे गरीब जनता की सेवा करने में हिचकिचाएँ नहीं और श्रम के महत्त्व को एक नई पहचान दिला सकें।
   iv. गाँधीजी अपने इन आध्यात्मिक प्रयोगों के माध्यम से वे देश की गरीब जनता की सेवा करने और उनकी तकदीर बदलने के साथ देश को आजाद कराने के लिए समर्पित व्यक्तियों की एक ऐसी जमात तैयार करना चाह रहे थे जो सत्याग्रह की भट्टी में उसी तरह तपकर निखरे, जिस तरह भट्टी में सोना तपकर निखरता और कीमती बनता है।
   v. गाँधी जी किसी काम को बड़ा अथवा छोटा नहीं मानते थे। वे पसीने की कमाई को सबसे अच्छी कमाई तथा शारीरिक श्रम को अहम मानते थे।
   vi. स्वावलम्बन और स्वरोज़गार

Section B

2. i. जब सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला तब कागज का एक टुकड़ा निकल आया। अथवा जैसे ही सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला वैसे ही कागज का एक टुकड़ा निकल आया।
   ii. सरल वाक्य।
   iii. उन्हें ठाकुर साहब के मेंबर बन जाने का पूरा-पूरा विश्वास था।
   iv. जो लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचते हैं वे उसके इस्तेमाल का तरीका भी जानते हैं।
3. i. बच्चों द्वारा फिल्म की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।
   ii. बाढ़ग्रस्त जम्मू-कश्मीर के लिए अनेक लोगों ने उदारता दिखाई।
   iii. मुझसे अब चुप बैठा नहीं जाता।
   iv. वह खड़ा भी नहीं हो सकता।
4. i. **गुड़िया-** संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक।
   ii. **चित्रों वाली-** विशेषण, गुणवाचक, बहुवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य-पुस्तकें।
   गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य- 'पुस्तकें' ।

iii. **वेस्टइंडीज-** संज्ञा, व्यक्तिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, अपादान कारक।

iv. **मुझसे-** सर्वनाम, एकवचन, पुरुषवाचक, पुल्लिंग, कर्ताकारक।
पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

5. i. रौद्र रस। तथा रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है।

ii. करुण रस व करूण रस का स्थायी भाव शोक है।

iii. वात्सल्य रस व वात्सल्य रस का स्थायी भाव वात्सल्य रति जो माता यशोदा के हृदय में स्थित है।

iv. श्रृंगार रस का स्थायी भाव है-रति।

Section C

6. i. बिस्मिल्ला खां का असली नाम अमीरुद्दीन था ।

ii. बिस्मिल्ला खाँ का बचपन अपने नाना के घर काशी में गुजरा। बिस्मिल्ला खां का बचपन काशी में गुजरा | उनके पूर्वज काशी में ही रचे -बसे थे | वे बालाजी के मंदिर प्रतिदिन नौबतखाने रियाज के लिए जाते थे, जहाँ रास्ते में रसूलनबाई और बतूलन बाई के गायन ने उन्हें संगीत के प्रति आसक्ति पैदा की, इसलिए उन्हें काशी से इतना अधिक जुड़ाव था ।

iii. बिस्मिल्ला खाँ का ही बचपन का नाम अमीरुद्दीन था । इनका जन्म 'डुमराँव' बिहार के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ था। वे 5-6 वर्ष के बाद अपने नाना के घर काशी आ गए थे। इन्हें शहनाई सम्राट के नाम के जाना जाता है |

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. जैसे ही आषाढ़ की रिमझिम बारिश आरंभ होती वैसे ही ग्रामीण परिवेश में सारा जन समुदाय खेतों की ओर उमड़ पड़ता है | पाठ में भी सारा गाँव अपने हल-बैल लेकर खेतों में उतर आते हैं | उसी पल उनके कानों में एक मधुर स्वर लहरी पड़ती है | बालगोबिन भगत बरसात में कीचड़ से लथपथ धन रोपते समय जब गाते थे तब हलवाहों के पैर उसी ताल के साथ उठते-गिरते थे | रोपाई करने वालों i उँगलियाँ उसी गति में चलने लगती थी | कलेवा लाती हुई औरतों के होंठ भी स्पंदित होने लगते थे | सारा वातावरण संगीतमय हो जाता था |

ii. 'लखनवी अंदाज़' पाठ के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है आज भी नवाबी लोग अपनी नवाबी छिन जाने पर झूठी शान तथा तौर-तरीकों का ही दिखावा करते हैं और ऐसा करते समय वे यह भी नहीं सोचते कि इसमें उन्हें कोई लाभ मिलने वाला नहीं | जैसे पाठ में अपने दिखावे की प्रवृत्ति के कारण नवाब साहब को भूखा ही रहना पड़ा | वास्तव में यह व्यंग्य उस सामंती वर्ग पर कटाक्ष करता है जो अपनी झूठी शान बनाए रखने के लिए कृत्रिमता से युक्त जीवन जीते हैं |

iii. फ़ादर बुल्के की उपस्थिति देवदारु की छाया जैसी इसलिए लगती हैं क्योंकि वे सबके साथ पारिवारिक रिश्ते बनाकर रखते थे,सबके घरों में उत्सवों और संस्कारों में पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। हर व्यक्ति को उनसे स्नेह और ममता मिलती थी। दूसरों के लिए उनकी नीली आँखों में सदा वात्सल्य तैरता रहता था।

iv. लेखिका और उसके सभी भाई-बहनों का लगाव अपनी माँ के साथ था क्योंकि माँ स्वभाव से बहुत सरल और शांत थी। वे धैर्य और त्याग की पराकाष्ठा थीं | घर में उनकी उपेक्षा होती देखकर लेखिका और उनके भाई-

बहनों का सारा लगाव उनसे ही था | ये लगाव भी सहानुभूति से ही उपजा था |

v. भटियारखाना - वह स्थान होता है जहाँ भट्टी जलती रहती है | लेखिका के पिता का मानना था कि वहाँ रहना अपनी योग्यता और क्षमता को नष्ट करना है | उनके अनुसार लड़की को रसोई तक सीमित कर देना उसकी प्रतिभा को कुंठित करना है | इससे लड़की को अपनी प्रतिभा को निखारने का समय नहीं मिलता इसलिए वे लेखिका को रसोई तक सीमित नहीं रखना चाहते थे |

8. i. नदियों के जल से सिंचित होकर ही फसल लहलहा उठती है। जल के अभाव में तैयार फसल भी नष्ट हो सकती है। फसल को नदियों के पानी का जादू कहने का कारण यह है कि फसल के लिए बीज-अंकुरण से लेकर पकने तक पानी की जरूरत होती है। नदियों का यह पानी सिंचाई के काम आता है। इससे फसलें तैयार होती हैं।

ii. लाख-लाख कोटि-कोटि' हाथ का आशय है कि फसल को तैयार करने में करोड़ों किसानों की मेहनत लगती है | अतः किसानो के स्पर्श के बिना भूमि बंजर हो जाएगी।
'लाख-लाख कोटी- कोटी हाथों के स्पर्श की गरिमा' इस पंक्ति का आशय है कि फसल को परिश्रमी किसानों और मजदूरों के हाथों के श्रम से ही उगाया जाता है। श्रमिक वर्ग के परिश्रम का ही फल है - फसल। फसल उत्पादन करना किसी एक व्यक्ति के हाथ का काम नहीं है।

iii. नदियों के जल, किसानों की मेहनत, धूप तथा हवा मिलने के बाद भी उपजाऊ मिट्टी के बिना फसल के लहलहाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। फसल को मिट्टी का गुण धर्म कहा गया है क्योंकि विभिन्न प्रकार की मिट्टी अपनी उर्वरा शक्ति से बीज अंकुरित कर उसका पोषण करती है, जिसके परिणामस्वरूप फसल तैयार हो जाती है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. फाल्गुन का मौसम तथा दृश्य अत्यंत मनोमोहक होता है। चारो तरफ का दृश्य अत्यंत स्वच्छ तथा हरा भरा दिखाई दे रहा है। पेड़ों पर कही हरी तो कही लाल पत्तिया हैं, फूलों की मंद-मंद खुसबू ह्रदय को मुग्ध कर लेती है। इसलिए कवी की आँख फाल्गुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।

ii. गायक सरगम को लाँधकर अनहद में चला जाता है, वह असीम आनन्द- ब्रम्हानंद में डूब जाता है। तब संगतकार मुख्या गायक को सहारा देकर स्थायी रूप देता है, तब मुख्य गायक वापस लौट आता है।

iii. पुरानी यादें और बड़े सपने जीवन के लिए दु:खदायी हैं। इनकी कल्पना में जीने से दु:खों की वृद्धि होती है। यश, वैभव, मान, सम्पत्ति ये सब बड़े सपने हैं जो छाया की तरह अवास्तविक एवं काल्पनिक हैं। मानव की यश, मान, वैभव, धन प्राप्त करने की वृत्तियों को दुखदाई कहा गया है क्योंकि ये सब चीजें काल्पनिक होती हैं। मनुष्य इनके पीछे दौड़ता रहता है और उतना ही भ्रम में फस जाता है।

iv. कन्यादान कविता में 'बेटी' को दु:ख बाचना नहीं आता हैं क्योंकि जब उसका विवाह हो रहा था तब वह अधिक समझदार नहीं थी। वह अत्यंत भोली एवम् सरल स्वभाव की है उसे दु:ख का अनुभव नहीं है। उसको ससुराल के बारे में अभी कुछ भी जानकारी नहीं है। अभी वह ससुराल को भी एक खेल ही समझती है कि वहाँ पर भी सब मेरे माता-पिता जैसे ही होंगे या वहां पर भी जैसे हम अपने घर पर खेलते हैं, खाते- पीते हैं ऐसे ही ससुराल में भी रहेंगे

पर उसे यह बिल्कुल भी पता नहीं है कि ससुराल की का जीवन अपने घर के जीवन से बहुत अलग है।

v. राम लक्ष्मण परशुराम संवाद में लक्ष्मण ने कहा कि देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय-इन पर हमारे कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती है। इन्हें मारने पर पाप लगता हैं और इनसे हारने पर अपयश होता है। अतः आप हमें मारेंगे भी तो हम आपके पैर ही पड़ना चाहिगे। हे महामुनि! मैंने कुछ अनुचित कहा हो तो धैर्य धारण करके मुझे क्षमा करना। हम आपसे किसी प्रकार का युद्ध लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहते हैं। आपका आदर सत्कार करना ही हमारा धर्म है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना इसलिए भूल जाता है क्योंकि बच्चों को अपनी उम्र के बच्चों के साथ ही खेलना अच्छा लगता है। वह अपने मित्रों के साथ उन सब खेलों का आनंद लेना चाहता होगा। मित्रों के साथ खेलते समय यदि वह रोता है तो उसके मित्र उसकी हंसी बनाते हैं और उसे अपने साथ नही खिलाते।

ii. रानी एलिजाबेथ के आने की खबर से भारतीय अखबारों में निम्नलिखित खबर छप रहे थे :-

i. रानी ने एक हल्के नीले रंग का सूट बनवाया है जिसका रेशमी कपड़ा हिन्दुस्तान से मँगवाया गया है ।
ii. उस सूत बनवाने में करीब चार सौ पौंड खर्चा सौ पौंड का खर्चा आया है ।
iii. रानी एलिजाबेथ की जन्म-पत्री भी छपी है ।
iv. प्रिंस फिलिप के कारनामे, नौकरों, बाबरचियों,खानसामों,अंगरक्षकों की पूरी-पूरी जीवनियाँ छप रही थी |
v. यहाँ तक कि शाही महल में रहने वाले, पलने वाले कुत्तों की तस्वीरें छप रही थी | ।

iii. प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका मौन भाव से शांत हो, किसी ऋषि की भाँति सारे परिदृश्य को अपने भीतर भर लेना चाहती थी। वह कभी आसमान छूते पर्वतों के शिखर देखती तो कभी ऊपर से दूध की धार की तरह झर-झर गिरते प्रपातों को, तो कभी नीचे चिकने-चिकने गुलाबी पत्थरों के बीच इठला-इठला कर बहती चॉदी की तरह कौंध मारती बनी-ठनी तिस्ता नदी को, नदी का सौंदर्य पराकाष्ठा पर था। इतनी खूबसूरत नदी लेखिका ने पहली बार देखी थी वह इसी कारण रोमांचित हो चिड़िया के पंखों की तरह हल्की थी। शिखरों के भी शिखर से गिरता फेन उगलता झरना 'सेवने सिस्टर्स वाटर फॉल' मन को आल्हादित कर रहा था। लेखिका ने जैसे ही झरने की बहती जलधारा में पाँव डुबोया वह भीतर तक भीग गई और उसका मन काव्यमय हो उठा। जीवन की अनंतता का प्रतीक वह झरना जीवन की शक्ति का अहसास दिला रहा था। सामने उठती धुंध तथा ऊपर मंडराते बादल लेखिका को और अधिक सम्मोहित कर रहे थे। नीचे बिखरे भारी भरकम पत्थरों पर बैठ झरने के संगीत के साथ ही आत्मा का संगीत सुनने लगी । पर्वतीय स्थलों का अनंत सौंदर्य का ऐसा अद्भुत और काव्यात्मक सौंदर्य लेखिका ने अपनी आंखों से निहारा। लेखिका ने कटाओ पहुँचकर बर्फ से ढूँकै पहाड़ देखे जिन पर साबुन के झाग की तरह सभी ओर बर्फ गिरी हुई थी। पहाड़ चाँदी की तरह चमक रहे थे। कहीं पर पहाड़ चटक हरे रंग का मोटा कालीन लपेटे हुए तो कहीं हल्का पीलापन लिए हुए प्रतीत होता है । वहां फूलों से भरी घाटियां है ।

Section D

11. **प्रस्तावना:-** शिक्षा का वास्तविक अर्थ है सीखना | संसार के सभी लोगों के लिए पृथ्वी पर अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है | अपने जीवन में प्रगति करने के लिए और चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के लिए मनुष्य के लिए शिक्षा एक अनिवार्य अंग है | शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य अपने शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में संतुलन बना सकता है | अतः शिक्षा मनुष्य की वो आँख है जो उसे भले-बुरे की पहचान कराती है और उसे प्रगति के पथ पर ले जाती है | **वर्तमान शिक्षा प्रणाली:-** समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई. में लागू किया गया। सन् 1835 ई. में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है। सन् 1944 ई. में देश में शिक्षा कानून पारित किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हमारे संविधान निर्माताओं तथा नीति-नियामकों ने राष्ट्र के पुननिर्माण, सामाजिक-आर्थिक विकास आदि क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया। इस मत की पुष्टि हमें राधाकृष्ण समिति (1949), कोठारी शिक्षा आयोग (1966) तथा नई शिक्षा नीति (1986) से मिलती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को ब्रिटिश शासन की देन माना जाता है | इस प्रणाली ने आज भी सफ़ेद कॉलरों वाले लिपिक और बाबू ही दिए हैं | अतः इसमें सुधार होना अत्यावश्यक है | **सुधार अपेक्षित:-** जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नए चेहरे, निजीकरण तथा उदारीकरण की विचारधारा से शिक्षा को भी 'उत्पाद' की दृष्टि से देखा जाने लगा है जिसे बाजार में खरीदा-बेचा जाता है। इसके अतिरिक्त उदारीकरण के नाम पर राज्य भी अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं। शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए शिक्षण संस्थाओं व विभिन्न सरकारी अनुष्ठानों आदि में आरक्षण की व्यवस्था की। पिछड़ी जातियों को भी इन सुविधाओं के अंतर्गत लाने का प्रयास किया गया। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि स्वतंत्रता के बाद विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा व प्राविधिक शिक्षा का स्तर तो बढ़ा है परंतु प्राथमिक-शिक्षा का आधार दुर्बल होता चला गया। शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीयता, चरित्र निर्माण व मानव संसाधन विकास के स्थान पर मशीनीकरण रहा।

इस प्रकार सामाजिक संरचना से वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संबंधों, पाठ्यक्रमों का गहन विश्लेषण तथा इसकी मूलभूत दुर्बलताओं का गंभीर रूप से विश्लेषण की चेष्टा न होने के कारण भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली आज भी संकटों के चक्रव्यूह में घिरी हुई है। प्रत्यक दस वर्षों में पाठ्य-पुस्तकें बदल दी जाती हैं जबकि शिक्षा का मूलभूत स्वरूप परिवर्तित कर इसे रोजगारोन्मुखी बनाने की आवश्यकता है।

वांछनीय शिक्षा व्यवस्था:-

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली गैर-तकनीकी छात्र-छात्राओं की एक ऐसी फौज तैयार करी है जो अंततोगत्वा अपने परिवार व समाज पर बोझ बन कर रह जाती है। अतः शिक्षा को राष्ट्र निर्माण व चरित्र-निर्माण से जोड़ने की नितांत आवश्यकता है। शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो और उसे भविष्य निर्माण के लिए तैयार

करे न कि ऐसी जो उसके विकास को अवरुद्ध करे |

OR

प्रतिभा किसी एक ही देश की परिरक्षित निधि नहीं है। प्रत्येक देश में विभिन्न प्रतिभाओं से युक्त मनुष्य रहते हैं जिनका उद्देश्य देश व समाज की भलाई करना होता है । जब किसी महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति को उसकी इच्छाओं के अनुरूप सुख,सुविधा और कार्य करने की आजादी नहीं मिल पाती तो वह विदेश गमन के लिए तैयार हो जाता है। अपने-अपने क्षेत्र के प्रवीण व्यक्ति जैसे वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ, साहित्य अथवा विभिन्न कलाओं के विद्वान, चित्रकार, कलाकार पुरुष और स्त्रियाँ अपने देश की प्रगति और समृद्धि में योगदान न देकर विवेश जाकर वहाँ अपनी सेवाएँ देते हैं और बदले में सुविधाओं का उपभोग करते हैं।

अगर किसी योग्य व्यक्ति को कोई सन्तोषजनक कार्य नहीं मिल पाता तो वह बेहतर काम के लिए अथवा अधिक भौतिक सुविधाओं के लिए दूसरे देशों में चला जाता है। अपने कुशल प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों की हानि से विकासशील देश सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि विकासशील देशों में वेतन और अन्य सुविधाओं के रूप में प्राप्त होने वाले लाभ कम हैं। विकसित देशों के रहन-सहन के ऊँचे स्तर की चमक-दमक ने विकासशील क्षेत्रों के लोगों को सदा ही अत्यधिक आकृप्ट किया है। प्रतिभा पलायन से संबद्ध आर्थिक समस्याओं को आसानी से हल नहीं किया जा सकता। इसके अलावा देश को छोड़ने वाले बुद्धिजीवी लोगों को इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि उनकी मातृभूमि ही एक ऐसा स्थान है जहाँ पर वे गौरव और सम्मान के उच्चतर शिखर तक जा सकते हैं और संरक्षण भी प्राप्त कर सकते हैं। विदेशों में अधिक वेतन और रहन-सहन का स्तर ऊँचा होने के बावजूद वास्तव में समाज से बहिष्कृत ही समझा जायेगा। जिस स्नेह और सद्भाव की आशा वे अपने देश में कर सकते हैं उसकी प्रतिपूर्ति विदेशों में प्राप्त होने वाले वेतन की बड़ी-बड़ी रकमों तथा अन्य सुख- सुविधाओं से नहीं हो सकती है। विकासशील देशों के लिए यह भी मुश्किल है कि वे अलग-अलग इकाइयों के लिए उचित राशियों की व्यवस्था करें चाहे वे व्यक्ति हो या सामग्री। जब उत्पादन अधिक होने लगे तभी माँगकर्ताओं को अधिक माँग करनी चाहिए। उस स्थिति के आने से पहले देश के हर व्यक्ति का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे इसकी उन्नति के लिए कार्य करे। विदेश में रहने वाले किसी भी व्यक्ति की एक सुप्त आकांक्षा होती है कि धनार्जन करने के बाद वह अपने देश में,अपने लोगों के साथ वक्त बिताए किन्तु वह विदेश आकर्षण के मोहपाश में बंधा रहता है इसलिए व्यवस्था को सक्रिय रूप अपना कर इस भ्रम को तोड़ना होगा और पलायन को रोकना होगा।

OR

जल, जीव-सृष्टि का मुख्य आधार है। जहाँ जल है वहाँ जीवन है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यही कारण है। कि प्रकृति ने जीवों के लिए पृथ्वी पर जल के विशाल भंडार उपलब्ध कराए हैं। मनुष्य-मनुष्येतर, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे सभी अपने अस्तित्व के लिए जल पर निर्भर हैं। ऐसे जीवनाधार जल की सुरक्षा और सदुपयोग मनुष्य मात्र का कर्तव्य हैं, किन्तु खेद का विषय है कि भौतिक सुविधाओं की अन्धी दौड़ में फँसा मनुष्य इस मूल्यवान वस्तु को दुर्लभ बनाए दे रहा है ।

जल का मानव जीवन के पग-पग पर महत्व है। बिना जल के हम जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकते जैसे हमें पीने के लिए जल चाहिए; नहाने के लिए जल चाहिए; भोजन बनाने और स्वच्छता के लिए जल चाहिए; खेतों की सिंचाई के लिए

जल चाहिए; दूध-दही, घी और मिठाई के स्रोत पालतू पशुओं के लिए जल चाहिए। झोंपड़ी और महल बनाने को, भगवान को मनाने को, पुण्य कमाने को तथा मनोरंजन और व्यापार को भी जल चाहिए। इसलिए जल का एक पर्याय जीवन भी कहा जाता हैं। जल के अभाव में एक क्षण भी नहीं बिताया जा सकता । संसार में स्थित मरुस्थल जल के अभाव का परिणाम दिखा रहे हैं। वहाँ रहने वाले लोगों का जीवन कितना कष्टदायक है । गर्मी के दिनों में इन क्षेत्रों को दोहरी मार पड़ती है एक ओर मानसून की देरी तो दूसरी ओर जल का बढ़ता अभाव। उन्हें बहुत दूर-दूर से जाकर पानी की व्यवस्था करनी पड़ती है ।

आज जीवन की रक्षा करने वाला जल स्वयं ही अपनी रक्षा के लिए तरस रहा है। सुख-सुविधाएँ सँजोने के पागलपन से ग्रस्त आदमी ने जल का इतना दोहन किया है, उसे इतना मलिन बनाया है कि देश में पानी के लिए त्राहि त्राहि मची हुई है। भूगर्भ में जल का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। गहराई से आने वाला जल खारा और अपेय हो गया है। नदियाँ हमारे कुकर्मों से प्रदूषित ही नहीं हुई हैं, बल्कि समाप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी हैं। प्रदूषण के कारण भूमण्डलीय ताप में वृद्धि हो रही है और ध्रुव प्रदेश की बर्फ तथा ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। यह सब महासंकट की चेतावनियाँ हैं जिन्हें मनुष्य अपनी मूढ़ता और स्वार्थवश अनसुनी कर रहा हैं ।आज हालत यह हो गई है कि जिस देश में लोग प्याऊ लगवाते थे, कुएं, तालाब,बावड़ी खुदवाते थे वहाँ के लोगों को पानी खरीद कर पीना पड़ता है। यह कितने दुर्भाग्य की बात है ।

आज जल-संरक्षण आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो गया है। जीना है तो जल को बचाना होगा। उसका सही और नियन्त्रित उपयोग करना होगा। जलाशयों को प्रदूषित होने से बचाना होगा। आज आने वाली पीढ़ी को अगर हम विरासत में कुछ देना चाहते हैं तो हमें जल के दुरुपयोग को रोकना होगा, लोगों में जागरूकता लानी होगी और इसके लिए युद्ध स्तर पर प्रयास करना होगा।

12. ग्राम पोस्ट -पटना, बिहार

२४ मार्च २०१९

प्रिय मित्र गोविन्द

सस्नेह नमस्कार

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे। हमारा तुम्हारा बहुत दिनों से संपर्क नहीं था किन्तु मैं तुम्हें अपने साथ घटी एक दुर्घटना के विषय में बताना चाहता हूँ कि अभी पिछले वर्ष मैं अपने माता-पिता के साथ चार धाम की यात्रा पर गया था और उत्तराखण्ड में जो भयंकर त्रासदी हुई उसका भोक्ता बना। मैं माता-पिता के साथ केदारनाथ धाम पहुँचा ही था कि 16 जून को बादल फट जाने से उत्तराखण्ड की नदियों में भयंकर जल प्लावन हो उठा और उसने पूरे क्षेत्र को तहस-नहस कर दिया मैं तो ईश्वर की कृपा और स्थानीय लोगों की सहायता से माता-पिता के साथ सकुशल बच गया। ऐसी विषम परिस्थितियों में पुजारी जी ने मुझे अपने घर ठहराया था इसलिए प्राण रक्षा हो गयी । बाद में जो भयंकर त्रासदी टीवी, समाचार पत्रों में देखी-पढ़ी उससे तो यही प्रतीत हुआ कि हम सच में भाग्यशाली ही थे जो बच पाए हैं।

दो दिनों तक मैं वहीं फँसा रहा क्योंकि वापस आने के सारे रास्ते बन्द हो चुके थे। किन्तु सरकार ने तत्परता दिखाई और उस त्रासदी में फँसे लोगों के लिए राहत कार्य शुरू कर दिया तभी सेना का हेलीकाप्टर वहाँ पहुँचा तब उसकी सहायता से हम तीनों बच पाए और देहरादून तक आ सके। वहाँ से मुझे अपने नगर के लिए रेल मिल गई और मैं सकुशल घर आ गया किन्तु कई दिनों तक मै वहाँ के दृश्य नहीं भूल पाया ।

हम जब मिलेंगे तब विस्तार से चर्चा होगी और मैं तुम्हें अपना अनुभव बताऊँगा । शेष फिर-

आपका मित्र
राहुल

OR

शिवपुरी, नई दिल्ली
२४ मार्च २०१९
प्रिय भाई
सोनू
सस्नेह नमस्कार
आशा है आप सपरिवार कुशल से होगें। आप को तो पता ही होगा कि इस बार हाईस्कूल की परीक्षा हमने बहुत अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण कर ली है | लेकिन कस्बे में कोई अच्छा विद्यालय न होने के कारण मैंने नए विद्यालय में प्रवेश ले लिया है। नगर का यह विद्यालय हमारे कस्बे के विद्यालय से बहुत बड़ा एवं भव्य है। बड़े-बड़े क्लास रूम स्थायी फर्नीचर एवं खेल का मैदान तथा बड़ा-सा पुस्तकालय इस कॉलेज में मुझे देखने को मिला। वास्तव में इस कॉलेज को देखकर हमें पता चला कि विद्यालय कैसा होना चाहिए। पढ़ाई का माहौल भी बहुत अच्छा है। पहले सप्ताह ही सभी कक्षाएँ निर्धारित समय पर लगने लगी हैं तथा कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति भी लगभग नब्बे प्रतिशत रहती है। प्रधानाचार्य एवं सभी अध्यापकों का रवैया सहयोग पूर्ण है। हमें परिचय पत्र एवं पुस्तकालय कार्ड भी मिला है। हम कोई सी दो पुस्तकें घर ले जा सकते हैं तथा 15 दिन के भीतर उन्हें जमा कर पुनः दो पुस्तकें पुस्तकालय से ले सकते हैं।
सभी अध्यापक अपने विषय के विद्वान हैं और हमारे पूछे गए प्रश्नों का उत्तर स्नेह पूर्वक समझाकर देते हैं। यही नहीं अपितु प्रत्येक छात्र के लिए किसी एक मैदानी खेल में भाग लेना भी अनिवार्य है। मैने फुटबॉल की टीम में अपना नाम लिखाया है जो मुझे विशेष प्रिय हैं। खेल अध्यापक हमें बड़े प्रेम से ट्रेनिंग देकर खेल में पारंगत बना रहे हैं। विद्यालय का अनुशासन और नियमबद्धता प्रशंसनीय है। चपरासी से लेकर प्रत्येक चाहे वह विद्यार्थी हो या अध्यापक अपना कार्य रुचि एवं लगन से करते हैं। यहाँ छात्रवृत्ति प्रदान करने की भी परंपरा है। समय-समय पर कार्यशालाएँ भी छात्रों के लिए चलती रहती हैं ताकि उन्हे भविष्य में उसका लाभ मिल सके।
यदि आप चाहे तो अभी कुछ सीटें कक्षा-11 में खाली हैं | चाचा जी से अनुमति लेकर यदि आप भी आ जाएँ तो दोनों भाई एक साथ एक कमरा लेकर रह लेंगे और साथ-साथ परीक्षा की तैयारी भी हो जाएगी। चाची जी को मेरा प्रणाम और छोटी बहिन तृप्ति को स्नेह, तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।
आपका प्रिय
राहुल

13.

सम्पूर्ण कलेक्शनस बुटिक फॉर वुमेन

स्पेशलिस्ट
वैडिंग कलेक्शन

पार्टी कलेक्शन

- लहंगा-ओढ़नी
- डिज़ाइनर कुर्तियाँ
- पार्टी वेयर सूट
- डिज़ाइनर साड़ी

कम दाम, उचित काम समय पर काम पूरा करने की गारंटी पता-

E- 43 मिन्टो रोड,

नई दिल्ली

फोन नं. 982112XXXX

OR

सुनहरा मौका

चूक न जाना !

क्या आप अभिनय में रुचि रखते हैं और इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं तथा फिल्मों में आना चाहते हैं?

- अपनी कला को एक नई पहचान दें
- अपने सपनों को साकार करें style="width: 200px; height: 200px; float: right;" />

तो आइए और **"राजा"** फिल्म में अभिनय करने के लिए अपनी प्रतिभा सिद्ध कीजिए।

ऑडिशन दिनांक २२ फरवरी,२०१९ को प्रातः 10 बजे से प्रारंभ

ऑडिशन स्थान- प्रथम तल, द्वारका सेक्टर - 8, फोन : 884545XXXX